



# SSC GD 2025



## अवसर बेच

# हिंदी

# वाच्य

LIVE 07-08-2024 06:30 PM

## वाच्य

→ वाच्य का शाब्दिक अर्थ → बोलने का तुंग  
तरीका

## परिभाषा →

जिस वाक्य में क्रिया को करने वाले कर्ता, कर्म, भाव की पहचान होती है वह वाच्य

कहा जाता है।

वाच्य के भेद →

तीन

- ① कर्तृवाच्य (कर्ता)
- (2) कर्मवाच्य (कर्म)
- (3) भाववाच्य (भाव)

① कर्तृवाच्य (कर्ता) जी शून्य विभक्ति ✓  
नहीं होगी

② कर्मवाच्य → कर्ता निर्जीव यदि कर्ता सजीव के द्वारा

③ भाववाच्य → कर्ता (से) ✓ नकारात्मक / एकवचन ✓ अन्य पुं०

सीता पढ़ती है ① शम ने आम खाया। → कर्तृवाच्य

② पेन चलाया गया। गाड़ी चला रही है (कर्मवाच्य)

रोगी से धूँगा नहीं जाता ③ उसने बैठा नहीं जाता। → भाववाच्य

① कर्तृवाच्य → जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है, और कर्ता के नौ विभक्ति मिलती हैं, गही न मिलती हैं।

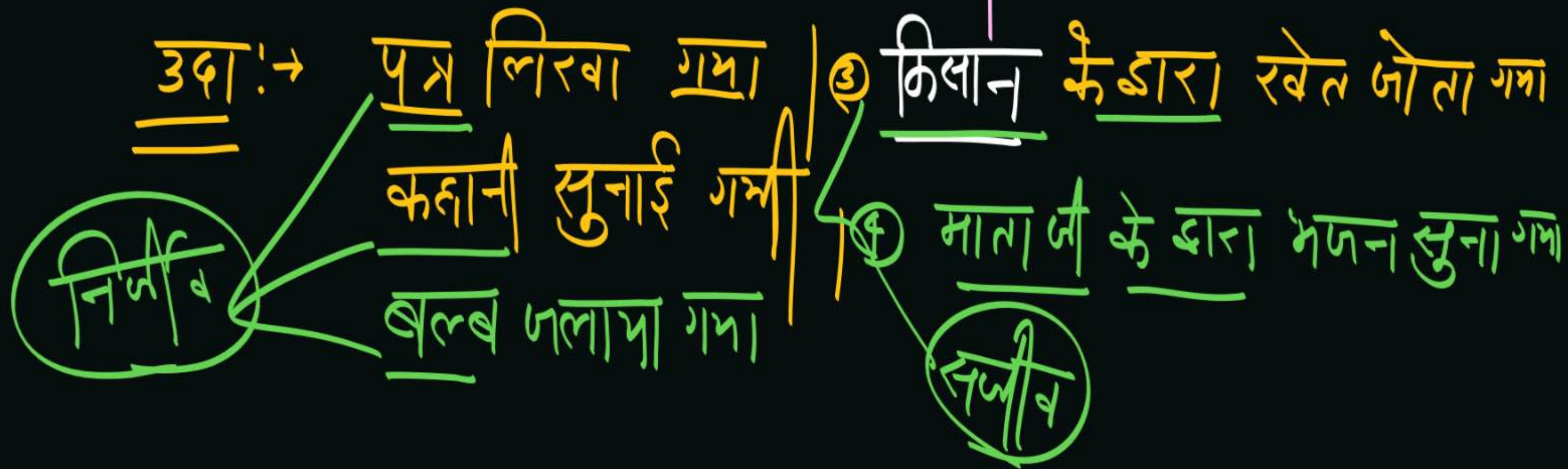
① शीतल ने पत्र लिखा। (लिखने, क्य।)

(2) राम ने सब रवाया।

(3) खिच पढ़ रही है।

(2) कर्मवाच्य → जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है।  
और कर्ता निर्दिष्ट ही आता है तथा संज्ञित कर्म

के द्वारा लगा होता है।



③ भाववाच्य → जिस वाक्य में भाव की प्रधानता होती है और कर्ता के साथ (सै) का प्रयोग किया जाता है।

→ अ-य-पुं / रु-क-वच- / नकारात्मकता का बोध होता है।

- \* दाढ़ी सै चला नहीं जाता। / सर्दी में उससे पढ़ा नहीं जाता।
- \* रोगी से बेबा नहीं जाता। / मोहन सै काम नहीं आता।

11

चाय खदक

रही है,

वाक्य में कौन-सा

वाच्य का प्रयोग हुआ।

(A)

कर्तृवाच्य

~~(B)~~

कर्मवाच्य

(D)

इनमें से कोई नहीं।

(C)

भाववाच्य

